

५३९२

हिन्दी ९३८



राज विकास माला

देवना

पुस्तकालय

१९५५

१९५५

समाज-विकास-माला : १२१

देवता

जॉन गॉल्सवर्दी के सुप्रसिद्ध नाटक का भावानुवाद

●
अनुवादक
श्रीकृष्ण

व १३९२

हि १५८

●
सम्पादक
यशपाल जैन

पुस्तक भंड के निमित्त है

●
१९६०

सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन

प्रकाशक

मार्तण्ड उपाध्याय

मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल,

नई दिल्ली

पहली बार : १९६०

मूल्य

४० सैंतीस नये पैसे

मुद्रक

हिंदी प्रिंटिंग प्रेस,

दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ सबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है, विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है, छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

पाठकों से

लीजिये, इस पुस्तक में एक सुन्दर और शिक्षाप्रद नाटक पढ़ लीजिये । इसके लेखक अंग्रेजी के महान लेखकों में से थे । अंग्रेजी में इस नाटक का नाम है 'दी लिटिल मैन' । इस पुस्तक में केवल भावानुवाद दिया गया है ।

यह नाटक पढ़ने में तो अच्छा लगता ही है, इससे सीख भी मिलती है । हमें हमेशा दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए और दूसरों की हर हालत में मदद करनी चाहिए ।

हमें विश्वास है, पाठकों को यह पुस्तक बहुत पसन्द आवेगी ।

—सम्पादक

देवता

पहला दृश्य

[समय : तीसरा पहर, स्थान : रेलवे स्टेशन का प्लेटफार्म । जलपान-गृह के बाहर कई छोटी-छोटी मेज और कुर्सियां पड़ी हुई हैं, जिनपर कई देशों और जातियों के लोग बैठे जलपान कर रहे हैं । कोई अमरीकन है, कोई जर्मन । बीच की मेज पर एक अंग्रेज जोड़ा बैठा कॉफी पी रहा है । उनकी बगलवाली मेज पर एक डच-युवक है और डच-युवक के बिल्कुल सामने वामन बैठा है । जलपान-गृह की दीवार के सहारे एक गरीब स्त्री बैठी है । पास ही दो गठरियां रखी हैं, जिनमें से एक पर उसने अपने बच्चे को बैठाया हुआ है । बच्चा काले शाल में लिपटा हुआ है ।]

अमरीकन : (बराबरवाली मेज से दुरबीन और कैमरा उठाते हुए) छोकरे, बहरे हो क्या ? मैंने तुमसे कॉफी लाने को कहा था । मैं यहां कब से बैठा हूं ।

जर्मन : और मेरा जूस (रस) कहां है ?

छोकरा : अभी लाता हूं, सा'ब ।

वामन : मिस्टर ! (छोकरा उसकी ओर

घूमता है) क्या मुझे चाय ला सकते हो ?

छोकरा : अभी लाया, सा'ब ।

वामन : धन्यवाद !

[छोकरा जाता है]

अमरीकन : क्षमा करें, महाशय, क्या मैं पूछ सकता हूं कि आपने उस छोकरे को 'मिस्टर' कहकर क्यों पुकारा ?

वामन : क्यों ? क्या मुझे 'मिस्टर' कहकर नहीं पुकारना चाहिए था ?

जर्मन : नहीं, बिलकुल नहीं !

वामन : किसीकी भावनाओं को ठेस पहुंचाना मुझे पसन्द नहीं है ।

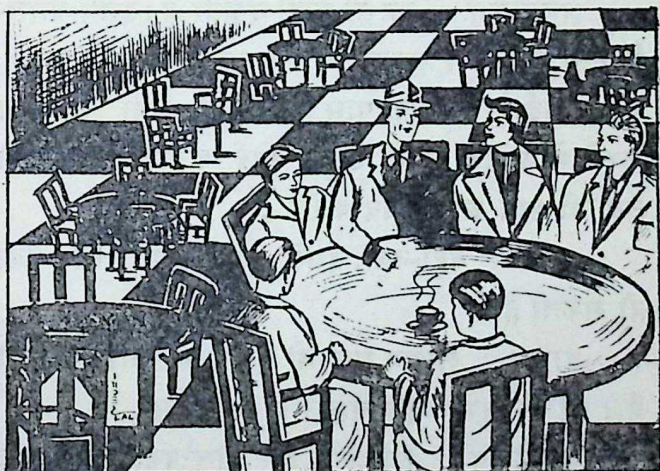
जर्मन : पसन्द नहीं है, ओह परमात्मा !

अमरीकन : हम लोग प्रजातंत्र के हामी हैं, लेकिन यह एक आदर्श भर है ।

जर्मन : ये लोग इतने नीच होते हैं कि यदि इनके साथ नरसी से बरताव करोगे तो ये सिर पर चढ़ जायंगे । देखते रहिये, आपको चाय नहीं मिलने की ।

[जैसे ही जर्मन यह कहता है, छोकरा वामन के लिए चाय का प्याला लिये प्रवेश करता है और रखकर लौट जाता है ।]

अमरीकन : मैं समझता हूँ, आप भाई-चारे में विश्वास करते हैं ? हम अमरीकन भी भाई-चारे में विश्वास करते हैं । जात-पात के भेदभाव से भी हम कोसों दूर हैं । मनुष्य के कर्तव्य के विषय में आपका क्या मत है ?



कई देश-जातियां के लोग बठे जलपान कर रहे हैं (वामन से बातचीत)

[वामन एक-दो क्षण इधर-उधर देखता है, फिर कुछ कहने को होता है कि तभी अमरीकन फिर बोल उठता है ।]

अमरीकन : उदाहरण के लिए, क्या हमें कम-जोर और बीमार लोगों को मार डालना चाहिए ?

इस बारे में आपकी क्या राय है ?

वामन : (सबकी ओर देखता हुआ) मैं तो उन्हें बचाने की कोशिश करूंगा।

[डच-युवक हँसता है। अंग्रेज अखबार की ओट में से उसकी ओर देखता है।]

अमरीकन : यह तो कोरी नम्रता है। इसमें वास्तविकता नहीं है। अच्छा, मैं एक सवाल और करता हूँ, जो सचाई के अधिक पास है; यदि कहीं सहायता करने में आपके अपने ऊपर कोई आफत आती हो तब भी क्या आप मदद करेंगे ?

जर्मन : नहीं-नहीं, इससे बड़ी मूर्खता और क्या हो सकती है ?

वामन : लेकिन मुझे तो इसमें भी कोई डर नहीं है। यों तो सभी यही चाहते हैं कि उनपर...

अमरीकन : (बीच में ही बोल पड़ता है) बड़े ऊंचे विचार हैं आपके ! (उठकर वामन से हाथ मिलाता है) मुझे आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। मेरा नाम है... मैं बर्फ की मशीनें बनाने का काम करता हूँ। मैं भी सामाजिक होना पसन्द करता हूँ (तभी दरवाजे पर छोकरा दिखाई पड़ता है) छोकरे, कहां थे अबतक ? मैं कितनी बार कॉफी लाने के

लिए कह चुका हूं। कान खोलकर सुन लो, यदि अब दो मिनट के भीतर-भीतर मुझे कॉफी नहीं मिली तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। समझे ?

छोकरा : अभी लाया, सा'ब।

जर्मन : और जूस भी। (छोकरा जाता है)

अमरीकन : (अपनी जगह आ बैठता है और जर्मन से कहता है) हम लोग आदमी के स्वभाव पर अधिक विश्वास करते हैं।

जर्मन : आदमी के स्वभाव की बात करते हैं आप ! वह तो मतलबी होता है, मतलबी !

वामन : तो क्या आप आदमी के स्वभाव में विश्वास नहीं करते ?

जर्मन : यह तो बड़ा विकट सवाल है ! (राय जानने के लिए चारों ओर देखता है। डच-युवक हँसता है। अंग्रेज हाथ का आधा अखबार पत्नी को देता है।) मैं तो आदमी के स्वभाव पर वहीं तक विश्वास करता हूँ, जहां तक वह साफ रहता है।

अमरीकन : मैं वीरता को भी मानता हूँ। यहां बैठे हुए लोगों में मुझे कोई भी वीर नहीं दीखता। मैं वीर उसे मानता हूँ, जो अपनी चिन्ता न करके दूसरे की

सहायता करता है। उस औरत को देखिये, वह वीर है। अपने बच्चे के लिए वह किसी भी घड़ी जान तक दे सकती है।

जर्मन : यह कोई बड़ी बात नहीं है। अपने बच्चे के लिए तो जानवर भी जान देने में नहीं हिचकते।

अमरीकन : लेकिन मैं जरा दूर तक सोचता हूँ। मान लीजिये, किसी तरह इंजन यहां आ जाता है, तब हम लोग इस बच्चे की रक्षा के लिए मरने को भी तैयार हो जायेंगे। यह क्यों? मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा है। (जर्मन की ओर देखकर) आप स्वयं नहीं जानते कि आप कितने अच्छे आदमी हैं? (जर्मन अपनी मूंछें ऐंठता है। अमरीकन अंग्रेज स्त्री से कहता है) श्रीमतीजी, मैं चाहता हूँ कि आप भी इस बारे में अपना मत दें।

अंग्रेज स्त्री : क्षमा कीजिये, मैं आपका मतलब नहीं समझी।

अमरीकन : अंग्रेज लोग मानवता के बड़े प्रेमी होते हैं। उनमें कर्तव्य की भावना बड़ी ऊंची होती है। ऐसे ही जर्मन होते हैं और ऐसे ही अमरीकन भी। (डच-युवक हँसता है) आपके सामान पर जो पर्ची लगी है, उससे मालूम पड़ता है कि आप डच हैं। मेरा विचार है कि आपके देश में भी ऐसा ही होता है। दरअसल

अब समानता और ऊंचे आदर्शों का युग आगया है।
(वामन से) महाशय, आप किस देश के हैं ?

वामन : मैं इसका ठीक उत्तर नहीं दे सकता।
मेरे पिता आधे अंग्रेज और आधे अमरीकन हैं, और
मेरी मां आधी जर्मन और आधी डच हैं।

अमरीकन : मेरे पिता, मेरी मां ! यह तो पुराना
और भद्दा ढंग है। (रेलवे सिपाही दिखाई पड़ता है)
इन वर्दीदार लोगों की कोई जरूरत भी है, मैं तो नहीं
समझता। अब हम लोग काफी सभ्य हो चुके हैं और
पहले की तरह स्वार्थी नहीं रहे हैं।

[तभी स्टेशनमास्टर उधर आता है। बैठे हुए
लोगों से वह कुछ कहता है और चला जाता है। जर्मन
उठ खड़ा होता है और अपना बैग उठा लेता है। डच-
युवक भी उठ खड़ा होता है।]

अंग्रेज : क्या कह रहा था यह ?

जर्मन : कह रहा था कि गाड़ी दूसरे प्लेटफार्म
पर खड़ी है और छूटने ही वाली है।

[सब लोग हड़बड़ाकर उठ खड़े होते हैं।]

अमरीकन : देखा कितनी खराब बात है। मुझे
काँफी अबतक नहीं मिली।

[सारे प्लेटफार्म पर हलचल हो उठती है। लोग

अपना-अपना सामान सम्हालने लगते हैं। वह स्त्री बच्चे को गोदी में लिये दोनों गठरियां उठाने की कोशिश करती है। लेकिन वे उससे सम्हाल नहीं रही है। आखिर हारकर वह सहायता के लिए चिल्लाती है। लोग उसकी ओर मुड़-मुड़कर देखते हैं और चले जाते हैं।]

अमरीकन : क्या बात है ? सहायता चाहिए ?
(चला जाता है)

वामन : (तेजी से मुड़ता है और झपटकर उस स्त्री से बच्चे को गोदी में ले लेता है। एक गठरी भी उठा लेता है) मेरे पीछे-पीछे चली आओ।

[स्त्री दूसरी गठरी उठाकर तेजी से वामन के पीछे-पीछे दौड़ती है। तभी छोकरा कॉफी का प्याला और रस का गिलास लिये जलपान-गृह के दरवाजे पर दिखाई पड़ता है।]

दूसरा दृश्य

[चलती हुई गाड़ी में दूसरे दरजे का डिब्बा। अंग्रेज और उसकी पत्नी आमने-सामने बैठे हुए हैं। दोनों अखबार पढ़ रहे हैं। उनके पास ही जर्मन बैठा हुआ है और उसके सामने अमरीकन महाशय जमे हैं। अमरीकन से थोड़ा आगे खिड़की के नजदीक डच-युवक

बैठा है। डिब्बे में बिल्कुल सन्नाटा है; सिर्फ गाड़ी के चलने की आवाज या कभी-कभी अखबार के पन्नों के फरफराने की आवाज सुनाई दे जाती है। तभी दरवाजे पर वामन दिखाई पड़ता है। उसकी गोद में उस गरीब स्त्री का बच्चा है और हाथ में गठरी है। वह अंदर की ओर भांकता है। अंग्रेज, जो बहुत अभिमानी है, अखबार पढ़ने का बहाना करता है। डच-युवक हँसता है।)

जर्मन : खूब ! बहुत खूब !

अमरीकन : अरे, आप हैं !

वामन : क्या यहां थोड़ी जगह है ? मुझे जगह नहीं मिल रही है।

अमरीकन : हां, एक आदमी के बैठने के लायक तो है।

वामन : क्या मैं बैठ सकता हूं ?

अमरीकन : हां-हां, क्यों नहीं ?

[जर्मन अनिच्छा से अपना बैग जरा सरका लेता है। वामन बैठ जाता है।]

अमरीकन : बच्चे की मां कहां है ?

वामन : मालूम पड़ता है, पीछे स्टेशन पर ही छूट गई।

[डच-युवक हँसता है। अंग्रेज अखबार से नज़र उठाकर देखता है।]

अमरीकन : ओह, यह तो बड़ी ही अजीब बात होगई।

[अंग्रेज अस्पष्ट-सी आवाज में कुछ बड़बड़ाता है, फिर अपना मुंह अखबार में छिपा लेता है।]

जर्मन : और आप उसकी गठरी उठा लाये और बच्चा भी! हा...हा...हा... (खिलखिलाकर हँसता है)



रेल का डिब्बा (वामन बच्चे को चुपाने की कोशिश करता है)

अमरीकन : बड़ी मजे की बात है। मालूम पड़ता है विधाता ने आपको मुसीबत में डाल दिया है।

[बच्चा रोने लगता है। वामन उसे हाथों में भुलाता है। वह सबकी ओर माफी की निगाह से देखता है। उसकी उस निगाह से सारे डिब्बे में हँसी की लहर फैल जाती है, सिर्फ अमरीकन गम्भीर रहता है।]

अमरीकन : एक ओर खड़े होकर चुप कराइये। शायद चुप हो जाय। वैसे माँ की बराबरी तो कौन कर सकता है ?

वामन : न जाने उस बेचारी का क्या हाल होगा ?

[सारे डिब्बे में फिर हँसी गूँज जाती है। अंग्रेज भी थोड़ी देर को अखबार हटा लेता है।]

अमरीकन : लेकिन यह हुआ कैसे ?

वामन : जिस समय मैं उसकी सहायता के लिए पहुँचा, गाड़ी छूटने ही वाली थी। मैं तो भागकर चढ़ गया, लेकिन गाड़ी चल पड़ी और वह बेचारी वहीं छूट गई।

[फिर हँसी गूँजती है।]

अमरीकन : अगर मैं आपकी जगह होता तो ऐसी हालत में बच्चे को उसकी तरफ फेंक देता !

वामन : लेकिन इसमें बच्चे को चोट लगने का खतरा था ।

[बच्चा फिर रोता है । वामन उसे हिलाता है । डिब्बे के सब लोग हँसते हैं]

अमरीकन : अरे ! यह कैसा बच्चा है ? (नाक सिकोड़ता है) यह तो बड़ा गन्दा है । बदबू आ रही है इसमें से ।

वामन : मैंने अभी तक इसे देखा भी नहीं ।

अमरीकन : ओह ये बच्चे भी खूब होते हैं ! क्यों न इसे थोड़ा खिड़की से बाहर करके चुप कराइये ।

अंग्रेज स्त्री : नहीं-नहीं...

अंग्रेज : (उसका घुटना छूकर) तुम चुप रहो जी ।

अमरीकन : शायद आप ठीक कहती हैं, बाहर तो ठण्डी हवा चल रही होगी । हम सबको ही इस बच्चे की फिक्र रखनी चाहिए । यह भी भाई-चारे की भावना है । यह लड़की है या लड़का ?

वामन : कह नहीं सकता । मुझे तो इसका सिर ही दिखाई दे रहा है ।

अमरीकन : तो आप बता भी कैसे सकते हैं ? अगर यह खुला हुआ होता तो ज्यादा अच्छा था ।

जर्मन : नहीं-नहीं, यह गजब न करना !

अमरीकन : आप ठीक कहते हैं । बच्चे को नंगा रखना उसके साथ अन्याय होगा । मेरा विचार है कि इस विषय पर किसी स्त्री की राय ली जाय ।

अंग्रेज स्त्री : हां-हां, बेशक । मैं...

अंग्रेज : (उसे छूकर) रहने भी दो । उसे कुछ नहीं हुआ है ।

अमरीकन : उसे कुछ हुआ है, या नहीं हुआ, यह तो ईश्वर ही जाने ! फिर भी, जहांतक मनुष्यता का सम्बन्ध है, हमें इसका चेहरा देखना तो चाहिए ।

वामन : (खुश होकर) यह तो मेरी उंगली चूस रहा ।

अमरीकन : मैं समझता हूं, शायद आपको बच्चे खिलाने का शौक है ।

वामन : जी नहीं, यह बात नहीं है ।

अमरीकन : मैं समझता हूं, यदि यह बच्चा तन्दुरुस्त हो तो हमारे लिए यह सौभाग्य की बात है । आजकल हमें कमजोर और छोटे लोगों में दिलचस्पी लेनी चाहिए ।

वामन : अब इसका मुंह कुछ-कुछ दिखाई देने लगा है । (सब आगे को झुक जाते हैं ।)

अमरीकन : अरे, इसकी शक्ल कैसी है ?

वामन : मुझे तो छोटे-छोटे धब्बों के अतिरिक्त कुछ और दिखाई नहीं दे रहा है ।

[जर्मन घृणा से मुंह फेर लेता है । डच-युवक हँसता है ।]

अमरीकन : (अंग्रेज स्त्री से) श्रीमतीजी, क्या आप इस विषय में कुछ बता सकती हैं ?

अंग्रेज स्त्री : हां, बता सकती हूँ । किस तरह के धब्बे हैं ?

वामन : सारे मुंह पर दीखते हैं । (सब लोग पीछे हट जाते हैं) लेकिन मुझे पक्का विश्वास है, बच्चा बिल्कुल स्वस्थ है ।

अमरीकन : मुझे तो इसमें शक है । ये खाल की बीमारियां ऐसी ही होती हैं । (जर्मन कुछ पीछे खिसक जाता है । डच-युवक भी अपने पैर पीछे खींच लेता है ।) क्या ये निशान फोड़े की शक्ल के हैं ?

वामन : हां-हां, लगते तो ऐसे ही हैं ।

अमरीकन : (गंभीरता से चारों ओर देखकर) तब तो, मेरे विचार में, इसके खसरा है । (जर्मन और सिकुड़कर बैठ जाता है ।)

अंग्रेज स्त्री : बेचारा बच्चा ! क्या मैं इसे देख सकती हूँ ? (आधी उठ खड़ी होती है ।)

अंग्रेज : छोड़ो भी ! तुम किस झगड़े में पड़ रही हो ?

अमरीकन : मैं आपकी भावनाओं की कद्र करता हूँ, श्रीमतीजी । लेकिन मुझे आपके पति के साथ भी हमदर्दी है । खसरा बड़ी बुरी बीमारी होती है । औरतों को बड़ी जल्दी लगती है ।

वामन : कितने चाव से मेरी उंगली चूस रहा है ! सचमुच, बहुत प्यारा बच्चा है ।

अमरीकन : (नाक सिकोड़कर) ये निशान कुछ-कुछ गुलाबी तो नहीं हैं ?

वामन : नहीं, जरा काले हैं ।

जर्मन : तब तो जरूर खसरा है ।

अमरीकन : खसरा ? वह तो बड़ी खतरनाक और फैलनेवाली बीमारी होती है ।

[डच-युवक सहसा उठ खड़ा होता है और गैलरी में चला जाता है । उसके पीछे-पीछे जर्मन भी चला जाता है । अंग्रेज, उसकी स्त्री और अमरीकन एक मिनट तक बिल्कुल खामोश बैठे रहते हैं । अंग्रेज स्त्री के चेहर पर उत्सुकता के भाव हैं । वामन को देख-देखकर उसे दया भी आ रही है और कुछ-कुछ डर भी लग रहा है । तभी अंग्रेज भी उठ खड़ा होता है ।]

अंग्रेज : उफ ! यहां तो दम घुटता है !

[अपनी पत्नी की बांह पकड़कर उठाता है और उसे गैलरी में ले जाता है। वह पीछे मुड़-मुड़कर देखती जाती है।]

अमरीकन : (गम्भीरता) चलूं, मैं भी चलकर गैलरी में सिगार पीता हूं।

[जैसे ही वह जाता है, वामन बच्चे को सामने-वाली सीट पर लिटा देता है और खिड़की से बाहर की ओर भांकता है। बच्चा रोने लगता है। वामन उसे ताली बजा-बजाकर चुप करने की कोशिश करता। लेकिन बच्चा चुप नहीं होता। वामन की कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करे ? चिंतित होकर वह इधर-उधर देखता है। फिर बच्चे को उठाकर खिड़की की ओर मुंह करके बैठ जाता है और उसे हाथों में झुलाता है। यह देखकर कि बच्चा अभी भी चुप नहीं हो रहा है, वह टूटी-फूटी आवाज में गाने लगता है। जैसे ही बच्चा चुप होता है वामन गाना बन्द कर देता है और हवा से बचाने के लिए बच्चे को सिर तक ढक देता है।]

तीसरा दृश्य

[प्लेटफार्म। वामन बच्चे को गोद में उठाये, बगल में गठरी दबाये, घबराया हुआ-सा खड़ा है, यात्री इधर-से-उधर आ-जा रहे हैं। तभी रेलवे अफसर नज़र पड़ता है। उसके पीछे-पीछे एक सिपाही है।]

रेलवे अफसर : (अपने हाथ में लिये तार को पढ़कर) ठीक है, यही आदमी है।

[दोनों वामन की ओर बढ़ते हैं]

रेलवे अफसर : (वामन से) यह बच्चा किसका है ? ... क्या यह उस स्त्री का बच्चा नहीं है ?

[बच्चे को छीनना चाहता है]

वामन : अरे-अरे, यह क्या गजब करते हो ! यह बीमार है।

रेलवे अफसर : मैं पूछता हूं, क्या यह बच्चा तुम्हारा है ?

वामन : नहीं, मेरा नहीं है।

रेलवे अफसर : ठीक है, तब तुम गिरफ्तार किये जाते हो। (सिपाही की ओर इशारा करता है। सिपाही आगे बढ़कर वामन की बांह थाम लेता है।)

वामन : लेकिन बात क्या है ? मुझे तो इस बच्चे की जरूरत नहीं है।

रेलवे अफसर : (गठरी उठाकर) मैं पूछता हूं,
क्या यह उस स्त्री की गठरी नहीं है ?



“तुमपर बच्चा भी है और गठरी भी।”

वामन : जीहां, उसीकी है ।

रेलवे अफसर : ठीक है, तब तुम्हें गिरफ्तार
किया जाता है ।

वामन : लेकिन यह तो मैंने उस स्त्री से ही ली
है । मैं चोर नहीं हूं...मैं...मैं...

रेलवे अफसर : बको मत ! मैं कुछ नहीं सुनना
चाहता ।

[सहसा बच्चा रो पड़ता है]

वामन : (बच्चे को हिलाते-डुलाते हुए) नहीं-
नहीं, मुन्ने, रोते नहीं...देखो, यह क्या है !

रेलवे अफसर : चुपचाप खड़े रहो ! अब तुम
गिरफ्तार हो !

वामन : बच्चे की मां कहां है ?

रेलवे अफसर : वह अगली गाड़ी से आ रही है।
उसका तार आया है कि जिस आदमी के पास शाल में
बच्चा और गठरी देखो, उसे पकड़ लो। तुमपर बच्चा
भी है और गठरी भी। अब भलाई इसीमें है कि चुप-
चाप हमारे साथ चले चलो।

[वामन को साथ लेकर वे द्वार की ओर बढ़ते ही
हैं कि तभी पीछे से अमरीकन उन्हें पुकारता है। रेलवे
अफसर रुक जाता है। वामन एक बेंच पर बैठ जाता
है। सिपाही उसके पीछे जाकर खड़ा हो जाता है।
अमरीकन आता है।]

अमरीकन : (रेलवे अफसर से) इन सज्जन को
कहां लिये जाते हो ? यह सिपाही साथ में क्यों है ?

रेलवे अफसर : क्यों, क्या बात है ?

अमरीकन : मैं कह रहा था यह सज्जन, जो स्वर्ग
के कोई देवता है और जिनकी भगवान भी कद्र करते
हैं, दुर्भाग्य से बेचारे पहले ही बहुत परेशान हैं। तुम्हें

इन्हें गिरफ्तार नहीं करना चाहिए। इनका सोने का दिल है, सोने का !

[वामन की ओर इशारा करता है और जेब से सोने का सिक्का निकालकर दिखाता है]

रेलवे अफसर : (यह समझते हुए कि अमरीकन उसे रिश्वत देना चाहता है) रिश्वत देना चाहते हो ? सचमुच यह बड़े शर्म की बात है !

[तबतक भीड़ इकट्ठी हो जाती है। भीड़ में अंग्रेज, उसकी स्त्री, जर्मन और डच-युवक भी हैं]

रेलवे अफसर : कुछ समझ में नहीं आता, क्या बात है ।

अमरीकन : मैं आपको बता रहा हूँ न कि यह भले आदमी हैं—संसार में शायद सबसे अधिक भले-मानुस हैं यह !

रेलवे अफसर : (एक बार तार फिर पढ़ता है) लेकिन मुझे तो अपना कर्त्तव्य बजाना ही है... (वामन की ओर बढ़ता है)

अमरीकन : अच्छा कर लीजिये गिरफ्तार ! जरूर अपना कर्त्तव्य पूरा करिये ! लेकिन इतना बता दूँ, इस बच्चे के खसरा है । ('खमरा' सुनते ही रेलवे अफसर चौंककर रुक जाता है) पहले दर्जे का खसरा ! काला

खसरा ! अब आप शौक से अपना कर्तव्य पूरा करिये !

रेलवे अफसर : खसरा ! इस बच्चे को खसरा !
हे ईश्वर !

अमरीकन : (जर्मन की ओर संकेत कर) यदि विश्वास न हो तो इनसे पूछ लो ।

रेलवे अफसर : (बहुत घबरा जाता है) खसरा तो बहुत बुरी और फैलनेवाली बीमारी होती है । अब क्या करना चाहिए ? (एक बार फिर तार पड़ता है) 'बच्चे को लिये हुए व्यक्ति को रोक लो ।' (वामन से) मैं आज्ञा देता हूं कि बच्चे को नीचे रख दो ! (लेकिन वामन सिर हिलाकर मना कर देता है) तुम्हें रखना ही पड़ेगा ।

[वामन दुःखी होकर चुपचाप नीचे बैठ जाता है]

अंग्रेज : (बहुत धीरे-से) ओह ! कितना देवता आदमी है यह !

जर्मन : इसकी आत्मा यह कभी मंजूर ही नहीं कर सकती ।

रेलवे अफसर : (सिर नीचे रखने का इशारा करता है) मैं कहता हूं, तुम्हें बच्चे को नीचे रखना ही पड़ेगा ! (वामन दयनीय दृष्टि से उसकी ओर देखता है ।) सुना नहीं तुमने ? बच्चे को नीचे रख दो और

मेरे साथ चलो !

[रेलवे अफसर की तेज आवाज से चौंककर बच्चा रोने लगता है ।]

वामन : क्या कहा ? इस बेचारे बीमार बच्चे को अकेला छोड़ दूँ ? यह कभी नहीं हो सकता !

अमरीकन : (जोश के मारे उछल पड़ता है ।)
शाबाश ! शाबाश !!

[अंग्रेज और उसकी पत्नी ताली बजाते हैं । डच-युवक हँसता है । रेलवे अफसर धीरे-धीरे कुछ बड़-बड़ाता है ।]

अमरीकन (जर्मन से) यह क्या बड़बड़ा रहे हैं ?

जर्मन : यह कह रहे हैं कि यह आदमी गिरफ्तार होने से बचने के लिए ही बच्चे को गोदी में उठाये है । बहुत चालाक है !

अमरीकन : यह इनका अन्याय है । (वामन की ओर इशारा करता है) यह तो बड़े दयालु हैं । बीमार बच्चे को लिये हैं और अब उसे तकलीफ और बेबसी की हालत में नहीं छोड़ना चाहते ।

[वामन उठकर एक-दो कदम आगे बढ़ता है । भीड़ बढ़ने लगती है । अमरीकन एक सन्दूक पर चढ़-

कर खड़ा हो जाता है । वामन फिर बैठ जाता है ।)

अमरीकन : (रेलवे अफसर से) मेरी राय में बच्चे की मां के आने तक इन्तजार करो ।

रेलवे अफसर : (जमीन पर पैर पटककर) इसकी मां को भी गिरफ्तार किया जायगा । वह खसरे के मरीज को लेकर बाहर क्यों निकली ? (फिर वामन की ओर मुंह करके) मैं कहता हूं, बच्चे को नीचे रख दो । (वामन मुस्कराता है) क्या तुम बहरे हो ?

अमरीकन : (रेलवे अफसर से) देखो, मेरी बात सुनो ! यह मानने में तो तुम्हें भी शायद आपत्ति नहीं होगी कि यह आदमी बहुत शरीफ हैं । यह इनका अपना बच्चा नहीं है, फिर भी यह उसके लिए अपनी जान को जोखिम में डाल रहे हैं ।

रेलवे अफसर : (अनसुना करके वामन से) देखो, या तो सीधी तरह बच्चे को नीचे रख दो, नहीं तो मुझे जबरदस्ती करनी पड़ेगी ।

अमरीकन : यह देखने में तो बड़ा मजा आयेगा ।

रेलवे अफसर : (सिपाही से) बच्चे को इससे छीन लो !

[सिपाही बहुत धीमे-धीमे कुछ बड़बड़ाता है, लेकिन बच्चे को नहीं छीनता]

रेलवे अफसर : (चारों ओर देखकर) क्या किसी-
में इतनी हिम्मत नहीं है, जो इससे बच्चे को ले सके ?

अंग्रेजी स्त्री : (आगे बढ़कर) मैं ले सकती हूँ...
[लेकिन उसका पति उसकी बांह पकड़कर पीछे खींच
लेता है ।]

रेलवे अफसर : (बच्चे को लेने के लिए साहस
जुटाकर तेजी से आगे बढ़ता है, लेकिन फिर यकायक
रुक जाता है और मरी-सी आवाज़ में कहता है) मैं
आज्ञा देता हूँ, नीचे बैठ जाओ !



स्त्री वामन से बच्चे को लेने लगती है ।

अमरीकन : ओह भगवान ! कैसा विचित्र

आदमी है ! इसे अपने कर्त्तव्य का कितना ध्यान है !

[डच-युवक हँसता है। रेलवे अफसर उसकी ओर देखता है, लेकिन जैसे ही वह मुड़ रहा होता है, उसकी नज़र तेजी से आती हुई बच्चे की मां पर पड़ती है।]

स्त्री : आई, मेरे बच्चे ! मेरे लाल !!

[उसका चेहरा चमक उठता है, वह वामन की ओर लपकती है।]

रेलवे अफसर : (सिपाही से) इस औरत को पकड़ लो !

[सिपाही स्त्री को पकड़ लेता है।]

रेलवे अफसर : (स्त्री से) क्यों जी, तुम खसरे के बीमार बच्चे को लेकर क्यों निकलीं ?

[अमरीकन अपनी दुरबीन निकालकर बच्चे की ओर घुमाता है]

स्त्री : (घबराकर) क्या कहा, मेरे बच्चे के खसरा है ? (सिर हिलाती है) झूठ, बिल्कुल झूठ !

रेलवे अफसर : तुम्हारे कहने का मतलब है कि उसके खसरा नहीं है ?

स्त्री : नहीं, बिल्कुल नहीं !

अमरीकन : (अपनी दुरबीन में से देखकर) शायद इसीका कहना ठीक हो ! मैंने तो बच्चे के

शरीर पर शाल की छाप देखकर खसरा बता दिया था ।

[डच-युवक हँसता है]

रेलवे अफसर : (क्रोध से उसकी ओर देखता है)
तो क्या इसके खसरा नहीं है ?

अमरीकन : (वामन से) जरा बच्चे की टांग पर से शाल तो हटाइये । (वामन बच्चे की टांग पर से शाल हटाता है । वहां कोई भी निशान नहीं है ।)

स्त्री : ओह, मेरे लाल ! (बच्चे की ओर झपटना चाहती है)

अमरीकन : अरे, कितने गोरे-गोरे नन्हें पैर हैं !
(रेलवे अफसर की ओर प्रसन्नता से देखता है)

रेलवे अफसर : (सिपाही से) इस स्त्री को छोड़ दो ।

[सिपाही स्त्री को छोड़ देता है । छूटते ही वह बच्चे की ओर झपटती है]

स्त्री : आ, मेरे बच्चे ! मेरे लाल !!

[बच्चा वामन के गरम शरीर से सहसा मां के ठण्डे शरीर को पाकर रो पड़ता है]

रेलवे अफसर : (आगे बढ़कर, सिपाही से) अब तो तुम इसे गिरफ्तार करोगे ?

अमरीकन : लेकिन अब इन्हें किसलिए गिरफ्तार कर रहे हो ?

[स्त्री, बच्चे को छाती से चिपकाये, वामन की ओर देखती है, फिर सहसा ही नीचे झुककर उसके पैरों को चूमती है]

अमरीकन : (अपना टोप उछालकर) खूब ! बहुत खूब ! (सन्दूक से नीचे उतरकर वामन से हाथ मिलाता है) मुझे आपपर गर्व है। यह मेरे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। (वामन का मुंह भीड़ की ओर करता है) देवियो और बंधुओ ! हम लोगों के सामने यह महापुरुष खड़े हैं। हम सबको इनपर अभिमान करना चाहिए। मैं चाहता हूं कि जब हम लोग घर वापस जायं तो इन महापुरुष की स्मृति अपने साथ लेते जायं और इनकी देवता जैसी सूरत को सदा अपने हृदय में रखें। यह पुण्य यादगार संसार की दूसरी बातों से ज्यादा मूल्यवान है। शायद यह बहन भी, जिनके बच्चे के कारण हमारे इन मित्र को बहुत-सी मुसीबतें उठानी पड़ीं, घर जाकर इन्हें भूल जायंगी; लेकिन जहांतक मेरा संबंध है, मैं तो मानवता पर इनके विश्वास से बहुत ही अधिक प्रभावित हुआ हूं और मैंने तो इनसे कुछ प्रेरणा भी पाई है। देवियो और

बन्धुओ ! मैंने आपके सामने एक महात्मा, एक महा-पुरुष को उपस्थित किया है। यह देवता हैं, इनके चारों ओर बस एक चमकते हुए घेरे की कसर है।

[वामन घबराया हुआ-सा खड़ा है। लोग उसकी ओर बढ़ते हैं और उसे घेर लेते हैं। रेलवे अफसर भी उसे सिर झुकाता है। सिपाही उसे सलाम बजाता है। डच-युवक अपना सिर हिलाकर हँसता है। जर्मन सीधा तनकर खड़ा हो जाता है, फिर जल्दी-जल्दी दो बार उसके सामने झुकता है। अंग्रेज और उसकी पत्नी दो कदम आगे बढ़ते हैं, एक दूसरे की ओर देखते हैं और लौट जाते हैं। वह स्त्री भी उसका हाथ चूमती है। तभी कुली दवा छिड़कने की मशीन लिये वामन के पीछे आकर उसका मुँह उसकी ओर घुमा देता है। दवा की गुलाबी फुहारें सूर्य की सुनहरी रोशनी में चमककर वामन के सिर के चारों ओर एक चमकता हुआ घेरा बना देती हैं।]

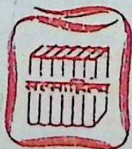
अमरीकन : (दौड़कर आगे बढ़ता है और घुटनों के बल बैठ जाता है) बस, एक मिनट ! मैं इस अद्भुत दृश्य का चित्र ले लूँ। (कैमरा वामन की ओर करता है)। यह कितना मनोहर है !



समाज-विकास-माला की पुस्तकें

- | | | |
|-------------------------------|--------------------------------|---------------------------|
| १. बदरोनाथ | ३८. हम सुखी कैसे रहे ? | ७५. परमहंस की कहाँ |
| २. जमन की गंर | ३९. गो-सेवा क्यों ? | ७६. सोने का कंगन |
| ३. मोक्ष पितामह | ४०. कैलाश-भानसरोवर | ७७. भाँधी की रानी |
| ४. निधि धोर दधीचि | ४१. धन्दा किया या बुरा ? | ७८. हुप्ता सवेरा |
| ५. चिनोबा धोर भूदान | ४२. नरसी महेता | ७९. बीरबल की बातें |
| ६. कबीर के बोल | ४३. पंढरपुर | ८०. मन के जीते जीत |
| ७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन | ४४. ल्हाजा मुईमुटीन चिस्ती | ८१. मुरब्बी |
| ८. गंगाजी | ४५. संत ज्ञानेश्वर | ८२. हरिद्वार |
| ९. मोक्ष मुद | ४६. धरती की कहानी | ८३. सागर की संर |
| १०. गांधी सुखी, हम सुखी | ४७. राजा भोज | ८४. ध्यानवान के रहस्य |
| ११. निषाद धोर शक्ती | ४८. ईश्वर का मंदिर | ८५. महामना मानवीय |
| १२. कितनी जमीन ? | ४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश | ८६. भवु हरि |
| १३. ऐसे थे सरदार | ५०. ये थे नेताजी | ८७. देवताओं का प्यारा |
| १४. पतन महाप्रभु | ५१. रामेश्वरम् | ८८. देश पों घागे बड़ेना |
| १५. कहावतों की कहावियाँ | ५२. क्यों का विसाव | ८९. हमारे मुस्लिम संत |
| १६. सरल व्यापार | ५३. रामकृष्ण परमहंस | ९०. नन्हा प्रयागील |
| १७. डारका | ५४. समर्थ रामदास | ९१. स्वामी विवेकानंद |
| १८. बापू की बातें | ५५. मोरा के पद | ९२. बाप भला, जग भला |
| १९. साहबजी धोर नेमिनाथ | ५६. मिल-जुलकर काम करो | ९३. नाविक |
| २०. संतुष्टी हजार नियामत | ५७. कालापानी | ९४. सूर के पद |
| २१. बीमारी कैसे दूर करें ? | ५८. पावभर प्राठा | ९५. संत बेमना |
| २२. माटी की मूरत जागी | ५९. संवरे की रोशनी | ९६. प्युराम हुराम है |
| २३. गिरिधर की कृतियाँ | ६०. भगवान के प्यारे | ९७. गोरा-बादल |
| २४. रहस्य के दोहे | ६१. हार्ल-प्रल-रहीद | ९८. पाटलिपुत्र |
| २५. सीता-प्रवेशिका | ६२. तीर्थंकर महावीर | ९९. महर्षि धर्मस्व |
| २६. तुलसी-मानम-मोती | ६३. हमारे पड़ोसी | १००. दानवीर कर्ण |
| २७. दादू की काली | ६४. आकाश की बातें | १०१. शेख सादी |
| २८. नजीर की नग्मे | ६५. सच्चा तीर्थ | १०२. गोदावरी |
| २९. सत नुकाराम | ६६. हाजिर-जवाबी | १०३. कुम्हार की बेंटी |
| ३०. हजरत उमर | ६७. सिंहासन-वत्तीसी ० भाग १ | १०४. नर्मदा |
| ३१. बाजीप्रभु देशगारे | ६८. सिंहासन-वत्तीसी : भाग २ | १०५. शंकराचार्य |
| ३२. तिरुवल्लुवर | ६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन | १०६. धर्मरत्नाम |
| ३३. फत्तुखा गांधी | ७०. मुरखराज | १०७. महाराजी प्रहिल्याबाई |
| ३४. शाह की खेती | ७१. नाना फड़नवीस | १०८. पड़ोस-लियोगे |
| ३५. कालिंदी | ७२. गुरु नानक | १०९. कोमार्क |
| ३६. तीर्थरात्र प्रयाग | ७३. हमारा संधिपान | ११०. मंगू भैया |
| ३७. तेन की कहानी | ७४. राजेंद्रबाबू का बचपन | |

मूल्य : प्रत्येक का ४० न०पे



नेपाल साहित्य मन्दिर